

भक्ति के सभी मार्गों में वास्तविक रूप से ईश्वर अनुपस्थित ही रहा है, इसीलिए सगुण भक्ति के तमाम अवतारवादी प्रतीकों के माध्यम से भक्ति साहित्य का अंतिम लक्ष्य अपने समय के मनुष्य की प्रवृत्तियों में बदलाव करना, उसे बेहतर मनुष्य बनाने की कोशिश करना। निर्गुण भक्ति भी इस अर्थ में सगुण है और अपने रूप-गुण-विधान से भरी सगुण भक्ति के दोनों आचाम राम और कृष्ण संबन्धी भक्ति धाराएं। अंततः निर्गुण ही हैं, क्योंकि वास्तविक ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों जगह अनुपस्थित है। इस अर्थ में भक्तिकालीन साहित्य की सभी धाराओं का प्रथम और अंतिम लक्ष्य मनुष्य ही है, इसीलिए भक्ति अपने पूर्ण स्वरूप में एक जन-आंदोलन ही था।

- इसी पुस्तक से



विजया बुक्स
दिल्ली 110032

ISBN : 978-93-81480-87-8



9 789381 480878

भक्तिकाल

वाणी और विचार

सम्पादक डॉ. राजेन्द्र यादव, अवधेश कुमार



भक्तिकाल

वाणी और विचार



सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव
अवधेश कुमार

भक्तिकाल

वाणी और विचार

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

अवधेश कुमार

विजया बुक्स

प्रकाशक
विजया बुक्स
1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 9910189445
Email : vijyabooks@gmail.com

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN : 978-93-81480-87-8

मूल्य : 695/-

मुद्रक
विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

□ प्रस्तावना

□ भूमिका

1. भक्तिकाव्य का रचना-संसार प्रो. वीरेन्द्र मोहन 15
2. इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दुन वारिए
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 19
3. कबीर का समाज दर्शन प्रो. चन्दा बैन 33
4. 'रामचरितमानस' की वर्तमान सांस्कृतिक भूमिका डॉ. पंकज चतुर्वेदी 39
5. भक्ति साहित्य का समाज दर्शन डॉ. राजेन्द्र यादव 57
6. कबीर का समन्वयवाद डॉ. आशुतोष 66
7. कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न डॉ. हिमांशु कुमार 71
8. संत रविदास की भक्ति में बेगमपुर की अभिव्यक्ति
डॉ. अरविन्द कुमार 76
9. भक्तिकाल : मीराबाई और स्त्री संघर्ष डॉ. मनीष कुमार 82
10. मीराबाई : जीवन और भक्ति सन्दर्भ डॉ. छबिल कुमार मेहेर 90
11. भ्रातृत्व के आदर्श : राम और भरत डॉ. सरोज गुप्ता 97
12. रामकथा का कालजयी ग्रन्थ 'श्रीरामचरितमानस' डॉ. घनश्याम भारती 102
13. सूरदास और उनके काव्य में भक्ति की लहरें! अवधेश कुमार 106
14. कबीर : सामाजिक समरसता के क्रांतिकारी संत
डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा 119

15. जायसी के काव्य में लोक-जीवन एवं मानवीय मूल्य
डॉ. मंगलसिंह अहिरवार 128
16. अर्थ और सन्दर्भ : कबीर-सूर-तुलसी
रूबी पाण्डेय 137
17. संत रविदास : चिन्तन एवं दलित मुक्ति की प्रासंगिकता
हरिश्चन्द्र यादव 144
18. संत रैदास की वाणी एवं विचार
भारती कोरी एवं मनोज कुमार 149
19. नाम स्मरण की महत्ता और संत साहित्य
अनुज कुमार शुक्ल 159
20. महामति प्राणनाथ के काव्य की प्रासंगिकता
शिवराम मौर्य 168
21. भारतीय संस्कृति और कबीर
रामाश्रय पटेल 178
22. मानवमूल्य और तुलसी का 'श्रीरामचरितमानस'
आशीष कुमार सिंह 183
23. कबीरा इश्क का माता...
नताशा इन्दुस्काया 190
24. मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई : मीराबाई
राखी देवी 195
25. मध्यकालीन साहित्य : धर्मनिरपेक्षता का मूल्यांकन
सपन राज 201
26. भक्ति : अवधारणा और मानव-मूल्य
अजय कुमार चौधरी 217
27. संत रैदास की सामाजिक चेतना
संजय कुमार 223
28. भक्ति साहित्य में मीरा और स्त्री अस्मिता
जुगुल किशोर चौधरी 230
29. रसखान के कृष्ण और भक्ति
सौरभ सिंह 235
30. सन्त कवियों की वैचारिक दृष्टि
कु. सरिता 239
31. सन्त कवि अक्षर अनन्य : दार्शनिक विचार
अरुण कुमार द्विवेदी 252
32. तुलसीदास की सामाजिक चेतना
अभिषेक दांगी 267
33. मलिक मुहम्मद जायसी और कुछ बातें...
सुधीर साहू 272
34. भक्तिकाल में लोकसाहित्य का प्रभाव
रतीराम अहिरवार 278
35. भक्ति आन्दोलन की राजनीतिक पृष्ठभूमि
शिवेन्द्र कुमार मौर्य 286
36. हमारे समय में 'कबीर'
साँई शरण चौबे 295
37. भक्ति आंदोलन का भारतीय संदर्भ
कृष्ण कुमार मिश्र 307
38. कबीर : कल, आज और कल...
सुमन 313